एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के
युवा अभियान का सशक्त
अखिल भारतीय अभिव्यक्ती मंच

www.antarbharati.org.in

आंतर भारती
ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

बच्चों का मनोरंजन करते – साने गुरुजी

● वर्ष : ५० ● अंक : १२ ● दिसम्बर २०१५ ● १० रुपये ● वार्षिक : १०० रुपये ● आजीवन : १००० रुपये

ISSN2321-5372

कृतिपूर्ण जीवन – साने गुरूजी का

आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंधसंपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी -413 522 (महा.)
ईमेल- aryavidyavanshi@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्यसंपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
अमर हबीब • पांडुरंग नाडकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
✻ मधुश्री आर्य ✻ अजय-अक्षय
मुखपृष्ठ छायाचित्र : कलाकृति स्व.शशिकांत+ बालाजी+विजय कुमार

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में ...

संपादकीय	-		05
आन्तर भारती	1	तुका म्हणे	08
आन्तर भारती	- 2 -	महात्मा बसवेश्वर वचन	09
आन्तर भारती	- 3 -	तिरुवल्लुवर वाणी	10
आत्मकथन	-	धुनी तरुणाई	11
विशेष आलेख	- 1 -	मेहनत का	14
काव्य भारती	-	फूल हैं	17
कथा भारती	-	एक आनन्ददायी यात्रा	18
विशेष आलेख	- 2 -	मदरसे	22
संस्मरण	-	डॉ.अब्दुल कलाम	24
चिन्तन भारती	-	ईसाई समाज	27
संस्था परिचय	-	साने गुरुजी	29
श्रद्धांजलि	-	समाज एवं हिन्दी	32
		साने गुरुजी जीवन पट	34

२५ अक्टू. वसमत (महा.) आन्तर भारती व्हॉटसप ग्रुप मिलन के बाएं से श्री संजय माचेवार, सदाविजय आर्य, श्रीमती संगीता देशमुख, अमर हबीब

संपादकीय...

यांत्रिक-मूल्यों के दौर में 'बिन 'आधार' सब सून...'

–डॉ.सी.जय.शंकर बाबु

मानवीय मूल्यों के गायब होते इस दौर में यांत्रिक–मूल्य अपना आधिपत्य जमा रहे हैं। औद्योगिक क्रांति से स्थापित हो रही मशीनी सभ्यता के युग में जिस भांति आम जन द्वारा पूंजीवाद का विरोध हुआ था, आज नव–पूंजीवादी सभ्यता के पनपने के लिए संभ्रांत जन द्वारा 'आधार' वाद का विरोध हो रहा है । हर व्यवस्था में कमजोर ही घिसेंगे, पिटेंगे, निरादर रह जाएंगे जबकी साइबर युगीन संस्कृति में भी संभ्रांत के लिए सत्यमेव जयते की सुरक्षा मिलती ही रहेगी। आम अवाम का तनाव जारी रहेगा, ऐसा आभास हमेशा मिलता ही रहा है। यांत्रिक–मूल्यों की संस्कृति के पनपते जन गन मन के लिए यही आदर बदा है। मानव संबंधों में मानवीय मूल्यों के गायब होते, विकृत होते देखकर कई मानवतावादी चिंतित नजर आते हैं। मगर इस दौर ने मानवीय संबंधों की जगह यांत्रिक संबंधों का ही प्रश्रय लिया है। इसे यदि पूरी तरह से कानूनी बल नहीं भी मिला हो तो प्रशासनिक बल तो मिल ही चुका है। इसके लागू होना किसी हद तक सुनिश्चित हो रहा है। हर नई सभ्यता का आश्वासन समानता, न्याय, स्वतंत्रता की गारंटी के रूप में ही सामने आ जाते हैं। इन शासनिक मूल्यों से आम जन के लिए सभी मायनों में न्याय नहीं मिल रहा है, मगर इसका आभास तो बढ चढ कर दिखाया जा रहा है। यही इस 'आभासी सभ्यता' के यांत्रिक–मूल्यों की संस्कृति की सच्चाई है। इस साइबर युगीन संस्कृति के कई दुराव हैं, इनसे संभ्रांत के लिए बचने के कई 'विशेष प्रावधान' भी हैं। मगर आम जन के फँसने के, फँसाने के कई 'आधार' हैं। 'आधार' ढूँढते जाएंगे, बनते–बनाते जाएंगे। कुछ भी अव्यवस्था हुई, बड़े–से बड़े अधिकारी, मंत्री जिम्मेदारी दिखाने के बहाने कई मायाजाल के बयान कर बैठते हैं, इनको अखबार उद्धरण–चिन्ह में छाप लेते हैं, टीवी चैनल बार–बार दिखाकर भ्रम पैदा कर देते हैं। मगर सचमुच आधार बना पाने के पक्ष में कितने हैं?

इन संपादकीय पंक्तियों में हर पंक्ति के लिए कई 'आधार' हैं। इन

आधारों के बावजूद कोई इन पंक्तियों की खातिर करें या आदर करें, इसमें संदेह है। क्यों कि 'पी.के.' सभ्यता के नशे में 'आदर' तो बड़ों का है, आम आवाम का हर कदम निरादर, सुरक्षित है उन्हें अपराधी का ही अनूठा किरदार...!

अपराधी बड़े–छोटे सभी बन रहे हैं –बड़ों के लिए बड़ी सुरक्षा, कानूनी सहूलियत मिल ही जाती है, छोटे तो फँसते हैं, पिटते हैं, 'न्याय, व्यवस्था, सत्ता' की ढींग हाँकते बैठते हैं बड़े... और इनसाफ की, आम आवाम की मूक आवाज यांत्रिक–सांस्कृतिक मूल्यों के बीच दबती ही रहती है, यांत्रिक संबंधों की सभ्यता विकसित होते हुए उस 'इनसाफ' की प्रतिबद्धता किसकी बने, यही बड़ा सवाल खड़ा रहता है सशस्त्र पहरेदार के रूप में सीना तन कर। भारतीय जनता के लिए विशिष्ट पहचान के रूप में 'आधार ' से संबंधित पूरी बातें यहाँ करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि सबको विधित ही हैं। मगर 'आधार' के पक्ष–विपक्ष के विमर्शों के बीच कुछ ही के लिए जबर्दस्ती लागू हो जाने, कई पहुँचे हुए लोगों के लिए 'विकल्प' का बड़ा छूट रह जाना, इन्साफ का खिल्ली उड़ाने से बढ़कर कुछ नहीं है, इस बात को स्पष्ट करना ही इन पंक्तियों का मंशा है। सचमुच इस यांत्रिक–संबंधों की संस्कृति को लागू करने में ईमानदारी होती, किसी को निरादर और बेइन्साफी के शिकार होने की जरूरत नहीं पड़ती है। चार खंभों के बीच एक मुलायम ढोलक को मरते–पिटते हिलते ही रहना है, संभ्रांत इन खंभों के मालिक, पहरेदार, अभिरक्षक के रूप में किसी बहाने विकल्प लेकर इन खंभों के सहारे बने छत पर सुरक्षा की गारंटी पाते हैं, आम अवाम की पिटाई इन खंभों के बीच होती ही रहनी है, यही 'आदर' उन्हें तकदीर है, उनके अभियोग के सबूत देने के कई कैमरे हैं, कई आधार हैं, कई विरोधाभासी कानून हैं, बचना है तो 'बेटा बस जीते रहो...' 'संभ्रांत बनने के लिए लगातार प्रयास करते रहो... ताकि 'विकल्प' का विशेषाधिकार मिल ही जाएगा। यांत्रिक संबंधों की संस्कृति को बढाते रहो... सर्वेजना सुखिनो भवंतु... समस्त सन्मंगलानि...!

संबंध तो रहेंगे ही यांत्रिक बनकर, मूल्य तो रहेंगे ही यांत्रिक बनकर, उन्हें बनाने का, बढाने का आग्रह जरूर कर उनसे बचने का सुध मत लोगे...

यह नशा चढ ही जाएगा तुम पर कि देहधारी मनुष्य होकर भी मन, मस्तिष्क और संबंधों के यंत्र ही बने रहो, तंत्र ही बने रहो... सचमुच 'मानव' बनकर मानवीय संबंधों के लिए तुम तड़पना चाहते हो... यह तो साइबर युगीन दौर, क्यों पीछे चलना चाहोगे, पिछडे बन जाओगे... साइबर संस्कृति का पीछा करो... बिना इन्सानियत के भी इनसान कहलाओगे, इसके लिए तुम्हारा सभ्य विग्रह, 'सभ्य' व्यवहार ही बड़े आधार है ये। अगर इनका विरोध करोगे, इन्साफ का, मानवीय संबंधों का आग्रही बनोगे तो तुम पर 'आधार' लागू ही जाएगा, 'बिन 'आधार'सब सून...।'

('आंतर भारती' के प्रिय पाठक, चाहकर भी इस संपादकीय को विस्तार देने से बच रहा हूँ। तमाम संदर्भों, उदाहरणों का उल्लेख करते हुए अपनी बात रखूँ, यह तो इच्छा होती है मगर संपादकीय पृष्ठों की सीमा भी होनी चाहिए, अतः अपनी बात इतने ही शब्दों में समेट रहा हूँ, इसका विस्तार पाठक बंधुओं के आग्रह पर वैकल्पिक माध्यमों, विधाओं से देने का जरूर आश्वासन दे रहा हूँ। संकेत रूप में प्रस्तुत इस संपादकीय में जो संवेदना छिपी है, उसके कई 'आधार' हैं। यह चर्चा भी विशिष्ट पहचान कार्ड 'आधार' उसको लेकर प्रचलित विमर्श, विकल्पों के निर्णयों, छूटों के मायने व यांत्रिक बनते संबंधों के बीच मानवीयता के गायब होने की चिंता छिपी हुई है। हाँ, इनके आधारों की प्रस्तुति के बिना यह संपादकीय भी सूना लग रहा होगा। इस बहाने रहीमखान की पंक्तियों को छेड़-छाड़ कर इस संपादकीय का शीर्षक भी बन गया है...। '...बिन 'आधार'सब सून...।' कोशिश रहेगी कि पाठकों का यदि आग्रह होगा, तो 'आंतर भारती' में लेख या किसी अन्य माध्यम पर एक विस्तृत आलेख के रूप में सभी आधारों को पेश करते हुए मै अपनी बात को सबल व सक्षम साबित करूँ और इस सूनेपन को खत्म करूँ।)

९ दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार-विरोधी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय परिप्रेक्ष्य का यह आंशिक संकेतात्मक संपादकीय है। १० दिसम्बर को अंतरराष्ट्रीय मानव एकात्मकता दिवस के उपलक्ष्य में मंगल कामनाओं सहित क्रिसमस पर्व की हार्दिक कामनाओं, आगामी नव वर्ष २०१६ की अग्रिम शुभकामनाओं सहित...

तुकाम्हणे

विश्वीं विश्वंभर

विश्वीं विश्वंभर । बोले वेदांतींचा सार ।।धृ।।
जगीं जगदीश। शास्त्रें वदती सावकाश ।।१।।
व्यापिलें हें नारायणें। ऐसीं गर्जती पुराणें ।।२।।
जनीं जनार्दन । संत बोलती वचन ।।३।।
सूर्याचिया परी। तुका लोकीं क्रीडा करी ।।४।।

English Translation

Vedanta says, Vishvambhara is omnipotent
Vishween vishwambhara

The essence of Vedanta1 says that Vishwambhara2 is omnipotent
The sacred texts state that Jagadeesha2
Pervades the whole world.
Saints declare that Lord Janardana2 pervades all living beings.

The puranas3 broadcast this massage.,
That Narayana2 the Omnipresent has informs the whole univers

Says TUKA, I move among the people
Just as the sun gives light day and night.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram Lakaki Rasta, Pune - 411 016

महात्मा बसवेश्वर वचन

कन्नड वचन

मरेयलागदु हरिय मरेयलागदु ब्रह्मन
मरेयलागदु तेत्तिसकोटि देवर्कळ
नम्म कूडलसंगम देवरे मरेयलिहुदु

हिन्दी वचनानुवाद

क्या हरि का विस्मरण संभव है
क्या ब्रह्मा का विस्मरण संभव है
क्या तैंतिस करोड देवताओं का विस्मरण संभव है।
उनमें हमारे कूडल संगम देव का विस्मरण हो रहा है।

भावार्थ :

जो सृष्टि का रचयिता, पोषण कर्ता है ब्रह्मा, विष्णु का विस्मरण संभव है? अर्थात् कदापि नहीं। वैसे ही तैंतिस कोटि देवताओं का विस्मरण संभव है? इन में हमारे कूडल संगमनाथ का विस्मरण हो रहा है जो नहीं होना चाहिए। अपने इष्ट, आराध्य ईश्वर का विस्तरण भक्तों को कभी भी नहीं करना चाहिए। महात्मा बसवेश्वर को भक्ति का भण्डार-भक्ति भंडारि कहा जाता है अर्थात् वे भक्त श्रेष्ठ हैं। भगवत की भक्ति अखण्ड करनी चाहिए। हर साँस-उसाँस के साथ उसका स्मरण करना चाहिए। जितनी जीवित रहने के लिए साँस की आवश्यता है वै ही ईश्वर का स्मरण भी अनिवार्य है।

-डॉ.इरेश स्वामी
'विद्या' 12 ब्रह्मचैतन्य नगर, विजयपुर रोड, सोलापूर- 413 004
0217-2342194, 9371099500

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल-तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद - डॉ. सी. जयशंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लर्वियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय ९. इनियवैकूरल (मीठी बोली)

इन्शोलाल् ईरम् अळैइप् पडिरुइलवात्र्
चेम्पोरुळ् कण्डार् वाय्च्चोल। (कुरल-९१)

साधु की बोली
मीठी होती; कटु तो
होती ही नहीं।

भावार्थ - धर्मबद्ध सज्जन के मुख से कपट रहित प्रेमभरे मीठे वचन. ही निकलते हैं।

अगनमर्नुदु ईदलिन नन्ऱे मुगनमर्न्दु
इनशोल नागप्पेरिन्। (कुरल-९२)

स्नेही दृष्टि से
मीठी बात; है बड़ा
उदार दान।

भावार्थ - दयापूर्ण हँस मुख चेहरे से मीठी बोली बड़े दान से बढ़कर है।

गतांक से आगे

आइए, हम हमारा मार्ग खोजें

-मोहन हिराबाई हिरालाल

वाहिनी के अधिकतर कार्यकर्ता निम्न दो संगठनों से आये थे।

1) युवा शांति सेना - सर्वोदय 2) राष्ट्र सेवा दल-समाजवादी युवजन सभा - समाजवादी। मैं इनमें से किसी के साथ भी जुड़ा नहीं था। चंद्रपुर में इनमें से कोई भी संगठन सक्रिय नहीं था, यह भी एक संभावित कारण हो सकता है। वह समय जागतिक स्तर पर छात्रों की सक्रियता का था। मुझे पढ़ने के प्रति लगाव था। गुजरात में हुए नव-निर्माण आंदोलन के संदर्भ में जेपी ने युवाओं से किया आवाहन समाचार पत्रों में पढकर मैं भी प्रभावित हुआ था। तब से जे.पी.क्या बोलते हैं, क्या करते हैं, इन बातों की ओर मेरा ध्यान रहता था। फिर बिहार में छात्र आंदोलन की व्याप्ति बढ़ने से वह अंततः संपूर्ण क्रांति आंदोलन में रूपांतरित हो गया। ये समाचार पढ़कर मैं इतना उत्तेजित हुआ कि, बिहार जाकर उस आंदोलन में शामिल हुआ जाए, ऐसा तीव्रता से लगने लगा। दूसरी ओर मुझमें बचपन से ही आदिवासी और जंगल इनके प्रति आकर्षण था। उसमें भी नुकीलापन आने लगा था। घर से बाहर निकलना है, यह लगभग पक्का हो चुका था। बिहार का संपूर्ण क्रांति आंदोलन या आदिवासी-जंगल इनमें चुनाव करने का ही प्रश्न था। आदिवासी-जंगल का नंबर प्रथम लगा। 5 फरवरी 1975 को मैं हेमलकसा 'लोकबिरादरी' में शामिल हुआ। मेरा जन्म चंद्रपुर के ही एक मध्यम वर्गीय व्यापारी परिवार में हुआ था। पिताजी सीधे-सरल आदमी थे। थोडे ईश्वर भक्ति की ओर झुके हुए ही, कहिए नां। माँ पुणे से थी। उस समय, सेवासदन जैसे स्कूल में प्रथम क्रमांक कायम रखनेवाली। शिक्षा लेने की भारी चाहत थी। लेकिन आठवीं कक्षा के बाद पढाई बंद कराकर चंद्रपुर जैसे दूरदराज के गांव में विवाह कर दिया गया। उसे पढ़ने का बडा चाव था। मुझमें भी वाचन की ललक पैदा हो गयी। निरीक्षण वाचन--- विचार प्रक्रिया आरंभ हुई। उसमें से दुनिया के बारे में समझ पैदा होने लगी। अपने आपकी खोज शुरू हुई। घर में मुझसे बडा एक भाई तो दूसरा छोटा भाई, और सबसे छोटी बहन थी। बडे भाई को भी माँ जैसी ही, पढ़ाई में भारी रूचि थी। स्कूल में उसका सतत प्रथम क्रमांक कायम था। मात्र मुझे स्कूल में पढ़ाई में विशेष रूचि नहीं थी। भाई-बहनों में मैं बीच का था। घर के लिए कमाई करने का दायित्व नहीं था। इस कारण घर से बाहर निकलना मेरे लिए आसान हो गया।

घर की सुरक्षित खोल से बाहर निकलना आवश्यक हो गया था। चंद्रपुर जैसा शहरी वातावरण था। घर में मुझे घुटन होने लगी थी। नौकरी-धंदा, पैसे कमाने का आकर्षण था ही नहीं। एक अदृश्य, अनगढ 'प्रिया' इशारे कर रही थी। अपने आपको जांचना भी आवश्यक हो गया था। बचपन से ही मैं बड़ा डरपोक था। साप, बिच्छू, चोर, भूत सबसे आत्यंतिक डर

लगता था। ऐसा लगता था, मानो अंधेरे में वे मेरी ही प्रतिक्षा कर रहे हैं। बिलकुल आठवीं, नववीं तक रात के अंधेरे में मैं अकेला संडास भी नहीं जा सकता था। शरीर से बोदा, खेलकूद में पीछे स्पर्धा के प्रति अरूचि एकान्तप्रिय, कल्पना की दुनिया में खो जाने वाला, पीछे-पीछे ही रहनेवाला, लड़कियों से बात करने की इच्छा होते हुए भी, उसे मूर्त रूप देने में अक्षम, ऐसा था मैं। ऐसी स्थिति में अपने-आपको परख लेना यह मेरी अपनी ही आवश्यकता हो गयी थी।

आदिवासी-जंगल क्षेत्र था हेमलकसा। वहां के लोकबिरादरी प्रकल्प में बिताये दिनों में मुझे काफी कुछ सीखने मिला। बचपन से ही इशारे करनेवाले जंगल-आदिवासियों से परिचय अधिक पक्का हुआ। अपने-आपको तौलने का अवसर मिला। साप-बिच्छू का डर कम हुआ। बाबा आमटे जी ने स्थापित की, 'महारोगी सेवा समिति' इस संस्था का करीब से परिचय हुआ। मैंने हेमलकसा पहुँचने पर, एक साल तक वहीं रहने का निर्णय लिया। दरम्यान देश पर आपत्काल थोपा गया। अगर इससे पहिले आपात्काल लगता, तो मैं हेमलकसा पहुँचता भी नहीं।

आपात्काल के दरम्यान कई भूमिगत कार्यकर्ता हेमलकसा आते थे। उनसे बातचीत का अवसर मिला। एस्.एम्.जोशी उन्हींमे से एक बडा नाम। भूमिगत साहित्य भी पढ़ने मिला। इसीसे जेपी के प्रति आकर्षण में अधिक ही वृद्धि हुई। बिहार में छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी यह संपूर्ण क्रांति के लिए निर्दलीय युवकों का संगठन बन गया था। लेकिन जेपी उसे बिहार तक ही मर्यादित रखा था। उचित समय आते ही उसे राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत करने की घोषणा वे करनेवाले थे। पूर्व निर्णित मनोदय के अनुसार हेमलकसा का एक वर्ष का वास्तव्य समाप्त होने का ही था। यहाँ के जंगल-आदिवासियों को देखा लेकिन अन्य स्थानों पर क्या स्थिति है, यह देखने की, जानने की इच्छा जागृत हुई थी। उसमें से 'इंद्रावति मुहिम' का कार्यक्रम निश्चित हुआ। उसका उगम होता है मार्दिगुडा गांव से अर्थात ब्लॉक युवामुल-रामपुर, जिला-कालाहांडी, ओरिसा। अन्ततः नदी सोमनूर में गोदावरी से मिलती है। भिन्न-भिन्न विषयों के साथ जुडे, इस नदी के उगम से संगम तक किनारे बसे हुए कुछ चुने हुए महाराष्ट्र में स्थित स्थानों का दर्शन करके आया। इस मुहिम दरम्यान में जगदलपुर में था उसी समय आपात्काल हटाकर चुनाव घोषित हुए थे। तुरन्त जेपी ने छा.यु.स.वाहिनी का काम देश में सभी तरफ शुरू करने की घोषणा की। वहीं मेरा निर्धार पक्का हुआ कि चंद्रपुर पहुँचकर वाहिनी का काम शुरू करें।

लोकमान्य तिलक विद्यालय में बैठक हुई। उसीमें चंद्रपुर छा.यु.सं.वा. की स्थापना हुई। युवकों की बैठकें, चर्चाएँ शुरू हुई। बिलकुल चिमडपन, लम्बी चर्चाएँ, वादविवाद इन्हें वाहिनी के विशेषता दर्शक लक्षण ही मानना पडेगा ऐसे दिमागी व्यायाम की मुझे आवश्यकता थी ही। वह वाहिनी के माध्यम से पूरी हुई। वाहिनी क्या है? किसलिए है? आदि प्राथमिक चर्चा के बाद जो मुद्दे युवकों की दृष्टि मे महत्त्वपूर्ण थे और जो सामने आये वे इस प्रकार थे-

प्रथम मुद्दा था जाति और लिंग पर आधारित सामाजिक भेदभाव-पूर्ण व्यवस्था

का। गहन और लम्बी चर्चा के उपरान्त ये दोनों सामाजिक भेद और उसपर आधारित व्यवस्था हमें अमान्य हैं, ऐसा निर्णय संघर्ष वाहिनी की चंद्रपुर शाखा में एकत्र हुए युवक–युवतियों ने लिया। यह व्यवस्था बदलना हो, तो आरंभ अपने–आपसे ही करना होगा। ऐसी चर्चा होते होते, वह हर किसी लिए महत्तम करीबी बात अर्थात 'नाम' पर आ पहुँची। लगभग सभीके वंशनाम जाति सूचक थे। लोग कुलनाम विशेष रूप से इसलिए पूछते हैं कि उससे व्यक्ति के जाति का अंदाजा लग सके। यह बात भी स्पष्ट हुई। जातिभेद न मानना हो, फिर हमारे जातिसूचक उपनाम कायम रखने चाहिए? यह प्रश्न भी सामने आया। ऐसे उपनाम। कुलनाम अपने नाम से हटा देने चाहिए, ऐसा निर्णय आम सहमति से किया गया। फिर नाम में बचेंगे दो ही घटक। इस कारण नाम का जो प्रमुख उद्देश है, एक व्यक्ति की दूसरी व्यक्ति से अलग पहचान हो, यह अच्छी तरह पूरा नहीं होगा। उसके लिए प्रत्येक नाम में कम से कम तीन घटक होना आवश्यक है। यह बात भी सबको मान्य हुई। लड़का या लड़की किस व्यक्ति की है, यह पहचान समाज चाहता है। इसी कारण हम पिता का नाम अपने नाम के आगे लिखते हैं। लड़के–लड़कियाँ क्या केवल पिता के ही होते हैं? वे जितने पिता के होते हैं, उतने ही माता के भी होते हैं। समस्या भी सुलझ गयी। अपना नाम, माँ का नाम तथा पिता का नाम, इस तरह अपना पूरा नाम लिखा जाए, ऐसा निश्चित हुआ। कानूनी पहलू पर भी चिंतन किया गया। चिंतन के उपरान्त ऐसी जानकारी मिली कि अपना नाम बदलने का प्रावधान कानून में है। जिल्हाधिकारी कार्यालय में एक फॉर्म के साथ एक शपथपत्र सादर करने के बाद पुलिस द्वारा पूछताछ होती है। उसमें प्रकरण का औचित्य स्थापित होते ही महाराष्ट्र शासन के राजपत्र में यह बदल प्रसिद्ध किया जाता है और आपका बदला हुआ नया नाम कानूनन उपयोग में लाने का हक प्राप्त होता है।

विवाह के पश्चात अधिकतर लड़कियों का पहिला नाम बदला जाता ही है। उसके नाम के साथ जुडा पिता का नाम तथा उपनाम/कुलनाम हटाकर पति का नाम तथा उसका कुलनाम जोड़ा जाता है। यह पितृसत्ताक तथा पुरुष प्रधानता का प्रतीक है। यह बात भी चर्चा के दरम्यान स्पष्ट हुई। इस कारण युवतियाँ भी अपने नाम के आगे माँ, पिता का नाम लिखें तथा विवाह के बाद भी उसमें बदल न करें। यह बात भी सभी की सहमति से तय हुई। इस निर्णय के अनुसार मैंने मेरा नाम कानूनी तौर पर बदल लिया। औरों को शुरू में थोडा संकोच हुआ। लेकिन इस बात का पता चलने पर मेरी माँ को बड़ी भारी खुशी हुई। उसपर छाया हुआ यह वाहिनी का फर्स्ट इंप्रेशन था। यह, आगे की दृष्टि से मेरे बडा काम आया। बाद के समय में, मैं वाहिनी के काम में कुछ अधिक व्यस्त होने पर भले ही माँ को यह पूरी तरह समझ में नहीं आया कि मैं क्या करता हूँ, लेकिन उसका यह विश्वास बना रहा कि जो भी करता होगा वह अच्छा ही होगा। इस कारण मैं भले ही घर से दूर गया, फिर भी घर से मेरा रिश्ता टूटा नहीं।

(क्रमशः)

विशेष आलेख - 1

मेहनत का पर्याय नहीं

–कल्पना सरोज

अकोला जिले के रिपाट गांव की मेरी पाठशाला उत्साह में अभ्यास करनेवाली, किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए तुरन्त हाथ खड़ा करने वाली मैं एक लहंगेवाली छोरी! हमारे खराटे सर अन्य बच्चों को चिढाते थे 'देखो जरा छोकरों.... अपनी 'कल्पी' कैसी खीलों जैसी तड़की.... नहीं तो तुम पोट्टे तो निरे बुद्धू हो।'

मेरी सर द्वारा की हुई प्रशंसा कइयों के पेट दुखने का कारण थी यह भी मुझे जल्दी ही समझ में आ गया। मेरी अन्यों की अपेक्षा बढचढ कर उत्तर देना अन्यों को स्वीकार हो ऐसा समय नहीं था। जातपात के अभिमान का प्रचंड प्रभाव रखनेवाले अपने भारत में आज भी जिस सामाजिक स्तर में (सच बोलें तो जाति में) मेरी पैदाइश जिस स्तर पर हुई उस समय विकास के अवसरों से वंचित होने का भाव प्रबल था। परन्तु मेरे जैसे अनेकों ने इसमें से प्रयत्नपूर्व बाहर निकलने, प्रचंड संघर्ष करके स्वयं को बाहर निकाला।

तुम्हे अपना जीवन अच्छी तरह जीने की इच्छा है तो तुम्हे लढना पड़ेगा ही। जिला शिक्षण का मूलभूत हक्क भी उस समय समाज ने प्रतिबंधित किया पर उसी समाज ने आज 'कमानी ट्युब्ज' जैसे बड़ी कम्पनी की प्रमुख के रूप में मुझे सन्मान से स्वीकारा है। मुझ पर विविध पुरस्कारों की वर्षा की है और सरकार ने मुझे 'पद्मश्री' सन्मान दिया है। यह उसी लड़ाई का यश है।

यह सारी यात्रा कैसी थी? सच कहूँ तो अत्यन्त संघर्ष जैसे मेरी छटी कोही पूजा गया था। पर मुझे ऐसा भी लगता है कि आखिर तुम्हारी तीव्र अभीप्सा तुम्हें किसी भी विकट परिस्थिति में से बाहर निकाल सकती है। मेरा जन्म 1958 में हुआ। वह भी विदर्भ के मूर्तिजापुर के पास रिपाटगांव इस छोटे से गांव में। आधुनिक विचारों की हवा वैसे गाँवों में देर से ही पहुँचती है। मुर्तिजापुर में भी यथावत देरी से ही पहुंचे। मै चार पांच वर्ष की होंगी, तुम्हारी जाति क्या है? इसकी जानकारी मेरे जैसी नन्हीं को भी दी जाती थी। एक प्रसंग मुझे अच्छी तरह याद है। हमारे विदर्भ में भाद्रपद मास में घर–घर में 'भूलाबाई' आती है आस पास की सभी लड़कियाँ शाम को घर–घर जाकर भूलाबाई के गाने गाते हुए अन्त में प्रसाद खाके दूसरे के घर गाना गाने के लिए भागती। मेरे घर पर भी खूब उत्साह से मेरी बहनों ने भी सजावट की, मां ने प्रसाद बनाया था। सहेलियाँ का झुंड

घर में आया, आनन्द से गाने गाए, अब प्रसाद बंटने ही वाला था कि कई सहेलियों की माताएँ मेरे घर पहुँची और अपनी अपनी लड़कियों को खींच कर अपने घर ले गईं। मुझे खुद रोना आया, ऐसा क्या हुआ? माँ ने समझाया कि हम दलित हैं। इसलिए ये लोग हमारे घर का खाएंगे पीएंगे नहीं। मेरी जाति, मेरा दलित होना क्या सचमुच इतना बुरा था?

मैंने कहीं पढ़ा था कि जन्म किस कुल में होगा यह ईश्वराधीन हो तो भी पुरुषार्थ कमाना यह अपने, सिर्फ अपने हाथ में होता है। मेरे माँ–बाप का भी इसी बात पर विश्वास होगा। 'बुद्धि का विकास यह मनुष्य का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।' यह डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के विचार उन्होंने आचरण में लाए थे मेरे पिता पुलिस में हवालदार थे। एक कमरे के सरकारी क्वार्टर में हम रहते थे। घर की परिस्थिति की वजह से वे पढ़ नहीं सके थे। परन्तु अपने बच्चे सीखेंगे तो ही इस अवस्था से बाहर निकल सकेंगे इसका विश्वास । परन्तु परिवार के बड़े लोग। समाज इसका प्रभुत्त्व हमारे घर पर हमेशा छाया रहता था। लड़कियों और महिलाओं को अतिशय निम्न स्तर का बर्ताव किया जाता था। मैं शायद बारह वर्ष की थी तब मेरे मामा मेरे विवाह के लिए एक रिश्ता लाए। लड़का मुंबई में रहता था। इसलिए यह रिश्ता हाथ से नहीं जाने देना चाहिए ऐसा पिताजी को समझाया। ये मामा सरपंच थे इसलिए उनके विरोध में किसी के बोलने की हिम्मत नहीं थी। मेरी सातवीं की परीक्षा होते ही अन्त में उन्होंने इस ग्यारह वर्ष बड़े लड़के से मेरा विवाह करा दिया। मैं उल्हासनगर आई। मेरे ध्यान में आ गया कि हम दोनों, सास, देवर, देवरानी सब एक ही बस्ती में एक छोटे से कमरे में रहते थे। उम्र से ज्यादा काम मैं करती थी। पति कहीं पर हेल्पर का काम करता था। देवर कुली था और देवरानी बर्तन साफ करती थी। नई आई हुई बहू को अपने कब्जे में रखने का एक दिमाग सभी को मालूम था वह था क्रूरता से सदा मारपीट करना। मेरे मायके में गरीबी थी परन्तु हर रोज स्नान करते थे । यहाँ वैसा नहीं था। सिर को तेल लगा कर बालों की ठीक कंघी करने पर भी मार खाती। अन्त में मैंने सबकुछ छोड दिया। मेरे बालों में जटा बन गई जैसे तैसे छह महीने में तो मैं सिर्फ हड्डियों का ढांचा रह गई।.

उन दिनों पत्र द्वारा पीहर में अपना हालचाल सुचिम करना तो दूर, पर हमारे समाज में लड़कियों को पीहरवालों से मिलना भी मुश्किल था। पर मेरे पिताजी से रहा न गया और वे एक दिन हमारे घर आ गए। शरीर पर फटे वस्त्र, बालों की जटा और शरीर हड्डियों का ढांचा। यह मेरी अवस्था उनसे देखी न गई। झट से मुझे लेकर हमारे गांव आए। पर गांव में तो उससे भी ज्यादा असह्य जीवन झेलना पड़ा। पिताजी ने फिर से स्कूल में डाल तो दिया परन्तु पति को छोड़ कर आई है कहकर गाँव वालों ने मेरी खिल्ली

उड़ानी शुरू कर दी। पहले स्कूल में अतिशय होशियार जानी जानेवाली को अब स्कूल में जगह नहीं थी। मुझसे घृणा करना तथा मेरे माँ बाप का सदा अपमान करना और सुन न सकें ऐसी गन्दी गालियाँ सदा देना यह एककलमी कार्यक्रम गाँव में शुरू हो गया। माँ को भी यह तनाव सहन नहीं हो रहा था। मैं पीहर में एक बोझ हूँ ऐसा मुझे अनुभव करा रहे थे। मैं परेशान हो गई और अत्यन्त निराशा ने मुझे घेर लिया। मेरी धीरे–धीरे जीने की इच्छा समाप्त होने लगी। एक दिन पास ही में रहने वाली बुआ के घर जाकर कीटनाशक औषधी की तीन शीशियाँ चुपचाप पी गई। पर वहाँ भी किस्मत ने धोखा दिया और बुआ जी के तुरन्त प्रयत्न का उपचार कराने से मैं बच गई। उस समय मैं पन्द्रह सोलह वर्ष की थी। मेरा पेट मैं स्वयं मर सकूंगी तो मुश्किल होगी ऐसा मुझे दिखा रहा था। बीच में ही मै सिलाई सीख रही थी। पुलिस में भी नौकरी के लिए प्रयत्न किया पर उम्र और शिक्षण कम पड़ा– यहाँ अब मेरा मन नहीं लग रहा था। अब मुझे इस गांव में रहना ही नही था।

मेरे चाचा बम्बई में, दादर में बापट मार्ग की एक बस्ती में रहते थे। उनके पास मुझे भेजा जाए, मैं मुंबई में नौकरी करूंगी ऐसी जिद मैंने पिताजी से की। अन्त में एक बार मुझे पिताजीने यहाँ लाकर छोड़ा। काका अविवाहित होने की वजह से यह मुसीबत मेरे घर नको, मैं उसकी तरफ कहाँ ध्यान देता रहूँ, ऐसा काका ने कहा।

अन्त में एक गुजराती परिवार ने मुझे सहारा दिया वे चाचा रेल्वे में ड्राइवर थे और चाची लीलावती में नर्स थी। उनके तीन बच्चों के साथ मैं थी ऐसा कह कर उन्होंने मुझे अपना बनाकर समा लिया। कैसा होता है न.... एक तरफ कुछ लोगोंने मेरा जीना हराम कर दिया था और यहाँ मनुष्य में मानवता रखने वाला परिवार मुझे मिला संसार में सब लोग बुरे नहीं होते, कुछ अच्छे भी होते हैं। यह मुझे पहली बार महसूस हुआ। मुझमें जीने की इच्छा जागृत हुई।

जल्दी ही एक हौजरी कंपनी में दो रूपये मजदूरी पर मुझे काम मिल गया। मेरी 60 रू तनख्वाह मुश्किल से काफी होती थी। गुजराती चौची मेरे खाने पीने कपड़े लत्ते, सब कुछ देखती थी, मेरे से कभी एक पैसा भी नहीं लिया। कुछ समय के बाद मेरी तनख्वाह दो सौ रूपये तक पहुँच गई। मेरे पास काफी पैसे जमा हो गए थे। पर उन्हीं दिनों किन्हीं कारणों से मेरे पिता की नौकरी छूट गई। मेरा परिवार सड़क पर आ गया।, स्वाभाविकतः वे मेरे पास मुंबई आ गए। माँ, बाप, भाई और तीन बहिने ऐसा सारे परिवार का भार मुझ पर आ पड़ा।

फिर 400 रूपये डिपोजिट भर कर मैंने कल्याण की एक चाल में एक कमरा किराए पर लिया। भाई, बहने छोटी–छोटी नौकरी करने लगे। नौकरी जाने के अपमान को पिताजी सहन न कर सके। उन्हें हृदयविकार का झटका आया, उनके उपचार का

खर्चा भी वहन करना कठिन था, जैसे तैसे वे ठीक हुए। वे दुर्बल हो गए। एक मेरी बहन बीच में खूब बीमार हो गई उसकी अलग-अलग ढंग की जांच करवानी पड़ती थी। यहाँ भी पैसे के अभाव में बहुत दिक्कत आती थी। हमारी आँखो के सामने उसने तड़पतड़प कर प्राण छोड़ दिए। यह मेरी सबसे बड़ी हार थी। पैसा नहीं कमाऐंगे तो हम इसी तरह एक एक को खो देंगे... यह विचार मुझे बेचैन करने लगा। तब फिर मैंने नौकरी के साथ साथ टेलरिंग का काम शुरू किया। (क्रमशः)

हिन्दी अनुवाद : डॉ.मधुश्री आर्य
07387860396

काव्य भारती - 1

फूल हैं हिन्दू-मुस्लिम

महताब अहमद 'आजाद'

हिमगिरि के ऊंचे शिखरों पर, वीर जवानों की टोली।
पहरेदार देश की बनकर, खाती सीने पर गोली।

वतन हमारा रहे सुरक्षित, रहे सुगंधित यह चमन।
फूल हैं इसके हिन्दू-मुस्लिम, महकाते अपना उपवन।।

सारे मिलजुल कर हैं रहते, एक बनाते हैं माला।
रंग बिरंगे फूलों की यह कितनी सुन्दर है माला।।

नफरत करने वालों का क्या है, नहीं कोई किरदार यहाँ।
यह वतन है वतन परस्तों का है नहीं कोई गद्दार यहाँ।।

फिर भी आस्तीन का कोई सॉप फन फैलायेगा।
कसम खुदा की इन हाथों से वह भी कुचला जाएगा।।

प्रेम मुहब्बत के हम हामी निभायें जिम्मेदारी।
नफरत फैलाने वालों के साथ नहीं हिस्सेदारी।।

जगमग जगमग दीप अमन का हम बैखौफ जलायेगें।
खुशहाली से भरा वतन का चमन सदा महकायेंगे।।

अबुलमाली, देवबन्द-247554 उत्तर प्रदेश
मो.नं.9319105646

कथा भारती

एक आनन्ददाई यात्रा

जान गोन्सात्विस

(कहानी एक शिक्षिका की जीवनभर ज्ञान दान देनेवाली एक शिक्षिका ने अपने अनुभवों के भंडार में रंखे हुए संचित अमृत कुंभ!)

अखंडित, अबाधित पैंतीस वर्ष एक सेवाभावी संस्था में ज्ञान दान करते करते वह आज सेवानिवृत्त हो रही है। कृतार्थ जीवन जिया इस बात का समाधान उसके चेहरे पर चमक रहा था। अपने शिक्षकीय पेशे में ईमानदारी-विश्वास, प्रामाणिकता से रहकर हम यथाशक्ति, यथामति, यथाकृति सेवा की इसी बात में उसे धन्यता लग रही थी। कृतज्ञता का भाव-भावना उसके चेहरे पर छलक रहा था। उसके साथ के शिक्षकों ने उसकी सेवापूर्ति का समारोह आयोजित किया था। हर कोई उसके लिए कह रहा था-

'एक मेहनती सच्ची शिक्षिका'
'एक सेवाभावी वृत्ति की शिक्षिका'
'सदैव ज्ञानदान देने में मग्न अजात शत्रु शिक्षिका'

सच कहें तो ऐसा उपरोक्त वक्तव्य, शब्द सुमन उसके जीवन को चित्रित करने वाले सच थे। अपनी सहशिक्षिका के लिए जो भाव व्यक्त किए है उसे काव्य रूप में अपने शब्दों में व्यक्त किया।

कृतज्ञता के पदचिन्ह
हृदय में मेरे उठे
यात्रा में अनेक मिलते है।
हृदय में घर कुछ ही करते हैं। इन गिने चुनों में आप हैं,
इसी का सच्चा सात्त्विक आनन्द है।
ज्ञान की इस यात्रा में
कभी मार्गदर्शक कभी प्रेरणास्स्रोत,
कभी सहकारी कभी सखा-सहेली
सदा संभालती रहीं।
निरीह मित्रता का साथ,
स्नेह का हाथ
इसलिए मानपूर्वक धन्यवाद।

रूमाल उसने अपनी आंखों पर रखा। टपटप गिरने वाले आंसुओं में उसे 35 वर्ष पूर्व का समय याद आया।

बारहवीं की परीक्षा के 85% अंक प्राप्त कर अपने स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त कर पास हुई। उसकी चारपांच सहेलियां अपने भविष्य के स्वप्नों के बारे में सलाह कर रही थीं। एक ने कहा ''मैं डॉक्टर होऊंगी।'' दूसरी ने कहा, ''मैं इंजिनीयरिंग में जाऊंगी। तीसरी ने पहले ग्रॅज्युएशन पूरा करके सी.ए.करने की इच्छा व्यक्त की। इसका नंबर आया तो वह सहज ही बोली मैं शिक्षिका होऊंगी, यह सुनते ही एकदम हंसी के फव्वारे उठने लगे। उस पर एक ने कहा- अरे तुझे भीख की तीव्र लालसा है क्या?'' कहती है मै शिक्षिका होऊंगी''

इसमें से दूसरी एक तरफ होकर बोली तेरी तबीयत तो ठीक है ना?इतनी स्कॉलर होकर शामा एक स्कूल की मास्टर होने वाली है। उस पर तीसरी ने कहा ''मेरे बाबा कहते थे, नहीं मिले भीख तो मास्टरी सीख!'' यह कैसी बात कर रही है तू।

इसपर वह बोली ''मुझे मालूम है, होशियार विद्यार्थिनी इंजिनीअरिंग, वैद्यकीय क्षेत्र में जाती है। तो शिक्षण क्षेत्र में हम क्यों न जाएं? और फिर यह मुझे मन से पसन्द है। इसलिए मैं जाने वाली हूँ।''

विद्यार्थियों के सुख-दुःख समझने के लिए एक प्रभावी क्षेत्र अर्थात शिक्षण क्षेत्र.... वगैरह वगैरह वह कितना भी बोलती रही तो भी उसकी सहेलियों को उसका गणित समझमें नहीं आया। एक पागलपन, अवैचारिक निर्णय है ऐसा समझ कर उसकी सहेलियां चली गईं।

देखते-देखते उसने डी.एड.प्रशिक्षण पूरा किया एक शैक्षणिक संस्था में शिक्षिका के पद पर हाजिर हो गई और लगातार पैंतीस वर्ष सेवा करके अपना जीवन कृतार्थ कर लिया।

हमने अपनी रूचि अनुसार क्षेत्र चुना, जीजान से बच्चों को ज्ञान दिया. पैसे कितने मिलते हैं। यह महत्त्व का नहीं था, पर उत्तम कोटि के समाधान महत्त्व का होता है और पराकोटि का आत्मिक समाधान पैसों के मापदंड से नहीं मापा जा सकता। सही सिखाना यह एक पागलपन है और इस पागलपन की अनुभूति उसने मन से स्वीकार की थी।

कभी-कभी उसके साथी नाममात्र का काम करते थे। परन्तु लिया हुआ काम पूरी जिम्मेदारी से सदा इसने किया। 'हमें जो मालूम है वह दूसरों को बताना, सबको होशियार बनाना' संत रामदास के बोल उसने व्यवहार में लाए। कभी-कभी उसके

साथी उसकी मज़ाक उड़ाते थे अरे सीख कर तेरा सारा ज्ञान तेरे विद्यार्थी ले जाएंगे फिर तू क्या करेगी कल? इस पर वह अपनी सखियों के पढ़ी हुई एक बोधकथा कहती थी।

एक बार एक पक्षी ने एक मधुमख्खी को पूछा ''तू इतनी मेहनत करती, शहद जमा करती छत्ता बनाती है। पर शहद दूसरे ही ले जाते? तुझे बुरा नहीं लगता? इसपर उस मधुमक्खी ने बड़े मार्मिक उत्तर दिया,,

''अरे पक्षी, मुझे क्यों बुरा लगेगा? वे लोग मेरा मधु ले जाते है'' पर मधुजमा करने की कला नहीं ले जा सकते ना!

इसपर उसके साथी चुप हो जाते और उसके अखंडित ज्ञानदान के कार्य की मज़ाक उड़ाते रहते थे। परन्तु उसे कुछ भी बुरा नहीं लगता था। दूसरों के दुर्गुणों की वजह से मनुष्य ने अपने सद्गुण नहीं छोड़ने चाहिए यही उसकी मनोधारणा थी।

हर बार कक्षा में जाने से पहले वह अपने विषय की तैयारी करती थी। उसकी सहेलियां कहती थीं 'अब कैसी तैयारी करती है?' इतने वर्षों मे यही विषय पढाती है। उसमें क्या नया और है? रटो और उलट दो! पर उसके मन को यह बात पटती नहीं थी। बच्चों को कुछ नया सिखाना यही उसका ध्येय था। आकाश में सूर्य रोज उगता है पर वह रोज नई आशा, आकांक्षा उम्मीद उत्साह आनन्द लेकर आता है। चैतन्यता की बहार बिखेरता है। सिखाना भी ऐसा ही बहारदार होना चाहिए उसमें नवीनता, उपक्रम, प्रयोग होने चाहिए और अगर वह आ गया तो, शिक्षण एक बोझ न लगे आनन्ददाई प्रक्रिया बन जाती है। वह प्रतिदिन करने की दिनचर्या न होका चैतन्यता की चांदनी बन जाती है। अखंडित अबाधित बहने वाला कलकल करने वाला उत्स्फूर्त गिरने वाले झरने जैसा । अनेक पुरस्कारों की अपेक्षा जब जब उसके भूतपूर्व विद्यार्थी मिलते और कहते 'बाई तुमने पुस्तकीय ज्ञान के अलावा जीवन के कितने अनुभव बताए थे वही हमारे जीवन का कलेवा बने' यह सुनकर उसे जीवन सार्थक होने का समाधान उसके चेहरे पर उभर आता था 'या वज्जीवन अध्यापक' यह मांत्र हम जीवन भर इमानदारी व विश्वास के साथ अपनाया इसका सात्विक तेज उसके चेहरे पर झलक रहा था। विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक सिखाया तो अपना कर्तव्य को केवल पाठ्यपुस्तक सिखाया तो अपना कर्तव्य समाप्त हो गया ऐसा उनसे कभी नहीं माना। तो पूरी तरह खाली होना चाहिए। आकाश मेघमल्हार जैसा है। इसलिए अध्यापन प्रक्रिया आनन्ददाई बनती थी।

एकादि कविता वर्षानुवर्ष सिखाते हुए अब आ जाती होगी, नीरस लगता नहीं

क्या ? ऐसा उसकी सखियां उसे हमेशा पूछती थीं। उस समय वह उनको उत्तर देती थी कि ''कविता पाठ पुराना हो तो भी हम को नया बनना चाहिए, हर बार नए-नए अनुभव साथ में जोड़ने से वही कविता, वही लेख नया पहरावा बनकर अपने सामने खड़ा रहता है। अध्यापन की यह सकारात्मक दृष्टि उसके जीवन में चेतनता का बाग खिलाती है।'' उसके सिखाने के तरीके से विद्यार्थियों में वह लोकप्रिय होती थी। यह खबर एक निजी क्लासेस के चालक तक पहुँची उसने इसे अपनी कक्षा में सिखाने की विनती की। उस समय उसने ठनका कर कहा ''मुझे साने गुरुजी होना है सिक्के गुरुजी नहीं।''

एक बार ऐसे ही बाजार में विद्यार्थियों के लिए पुरस्कार खरीदने एक छोटीसी दुकान में गई थी। दुकानदार पैसे के गल्ले पर बैठा था। उसका नौकर किसी काम के निमित्त बाहर गया था। 50 कापियों की मांग उसने दुकानदार से की, 'हमारा नौकर बाहर गया है इसलिए आपको थोडी देर ठहरना पड़ेगा' ऐसा उसने उत्तर दिया। इसपर 'उसकी चिन्ता मत करो मैं गिनकर ले लेती हूँ, 'ऐसा कह कर उसने गिन कर 50 कापियां लेली'' दूकानदार को पैसे देने ही वाली थी कि उसका नौकर आया वह फिर से कापियां गिनने लगा तो दुकानदार वे कहा 'अरे बाबा, कापियां फिर से गिनने की आवश्यकता नहीं' वह बाई झूठ नहीं बोलती वह पाठशाला की शिक्षिका है।

समाज ने शिक्षिका को दिया हुआ यह एक प्रशस्तीपत्र था। जीवन के अन्दर क्या चाहिए! सच पूछें तो वह दुकानदारउसके विद्यार्थियों का पालक नहीं था।उसका बेटा शाला में पढ़ता नहीं था। केवल दुकानदार ने स्त्रीनाम की शिक्षिका पर डाला हुआ विश्वास था। आयुष्यभर जो उसने ईमानदारी से सिखाया, उसकी कैसे उसकी रसीद थी।

अनुवाद - मधुश्री आर्य

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए,
किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिए।

सत्य के ग्रहण करने और
असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए

-म.दयानंद सरस्वति

विशेष आलेख - 2

मदरसे : ऐतिहासिक पार्श्वभूमि

-डॉ.रज़िया पटेल

मदरसा यह अरेबिक भाषा का शब्द है। दरसः (DRS) इस धातु का अर्थ है। to learn, Study मदरसा शब्द का अर्थ सीखना है। सीखने और अभ्यास करने का स्थान अर्थात मदरसा। इस्लाम के इतिहास में पहला मदरसा हजरत बिनझैद की जगह पर एक सफा नामकी टेकड़ी के पास शुरू किया गया। मुहम्मद पैगम्बर वहाँ के पहले शिक्षक और उनके अनुयायी उनके विद्यार्थी।

इस मदरसे का पाठ्यक्रम कुराण हदीस, से घुडसवारी, शुद्ध शिक्षण, प्रथमोपचार इत्यादि थे। आगे आगे मदरसे में अनेक विषयों का समावेश होता गया।

इस्लामिक देशों में मदरसा अर्थात संपूर्ण शिक्षण की व्यवस्था इसमें प्राथमिक स्तर अर्थात मकतब बच्चा चार वर्ष का होने पर मकतब में दाखिल किया जाता था। कुरान के अक्षरज्ञान, प्रार्थना, कुरान पठन आदि सिखाए जाते थे। ये मदरसे मस्जिद से जुड़े होते थे। इन मदरसों में अलग-अलग प्रकार के कौशल सिखाए जाते थे।

माध्यमिक स्तर 14 वें वर्ष से शुरू होते थे और इसमे धर्म शिक्षा के साथ शास्त्र, हस्तव्यवसाय, व्यापार, भूमिति, हस्तव्यवसाय कारागिरी इत्यादि सिखाए जाते थे। इसके बाद इस्लामी कानून, वैद्यकी, प्रशासन इत्यादि विषयों में विद्यार्थी अपनी रूचि अनुसार निपुणता प्राप्त करते थे। यह उच्चस्तर का शिक्षण विद्यार्थी के स्तर के होते थे। मूलतः यह इस्लामिक तत्वज्ञान ही होता था। मात्र मनुष्य जीवन के अनेक विषयों को समझ लेने का ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया इस शिक्षण पद्धति 'अल अजहर युनिव्हर्सिटी' इसी प्रकार की शिक्षण पद्धति का एक विद्यापीठ कैरो (इजिप्त में)में है भारत में मदरसे की शुरूआत 12 वीं शताब्दी में हुई। गुलाम वंशों के इल्तुमश, रझिया सुल्तान ये विद्याप्रेमी होने से उन्होंने कई मकतब और मदरसे शुरू किए। मुगल काल में मदरसों को प्रोत्साहन मिला। सम्राट अकबर ने बहुत से मदरसे खोले। मदरसों के शिक्षणक्रम में अनेक सुधारणा की। गणित, इतिहास, भूगोल, प्रशासन, संगीत, शिल्प शास्त्र इत्यादि विषयों का समावेश किया। सम्राट अकबर ने मदरसों का एकतरह से धर्म निरपेक्षीकरण किया। उन्होंने मदरसों के शिक्षणक्रम में संस्कृत भाषा का समावेश किया। और उसमें मुसलमानों के साथ-साथ हिन्दु बच्चों के भी शिक्षा की सुविधा की।

मदरसों की विशेषता अर्थात मदरसे के पाठ्यक्रम के दो भाग थे। एक धार्मिक और दूसरा सांसारिक। धार्मिक में कुरान, हादिस, कुराण, पठन, समीक्षा, इस्लाम का इतिहास, कानून इत्यादि तो सांसारिक पाठ्यक्रम में अरबी, फारसी, व्याकरण, गणित, इतिहास,

भूगोल खेती इत्यादि विषयो का अध्ययन था। मदरसों की दूसरी विशेषता अर्थात मुसलमान शासक और श्रीमंत लोगों के बच्चों की शिक्षा घरपर शिक्षक बुला कर की जाती थी। फिर भी मुसलमान शासक और श्रीमंत लोग मकतब और मदरसों को आर्थिक सहायता करते थे। पूरा शिक्षण निःशुल्क रहता था। अध्ययन समाप्त होने पर प्रमाणपत्र मिलता था।

ब्रिटिशों के राज्य में अभिजन मुसलमानों के लिए कलकत्ता में मदरसे की स्थापना वॉरेन हेस्टिंग्ज ने 1785 में की, कारण था कि धर्मांतरित न्यायव्यवस्था चलाना, सक्षम अधिकारी तैयार करना जो कि ब्रिटिश प्रशासन को मदद करें। इसी उद्देश्य से बनारस में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की गई थी। कलकत्ता के मदरसों पर और बनारस संस्कृत पाठशालाओं पर एक-एक ब्रिटिश अधीक्षकों की नियुक्ति की गई थी।

बाद में देशी शिक्षण का पतन हो गया। उसमें मदरसे, संस्कृत पाठशालाओं का ऱ्हास हुआ। मुख्य तह सम्राट अकबर ने मदरसों के धर्म निरपेक्षीकरण किए थे वे भी नष्ट हो गए। सर सय्यद अहमदखानने मुसलमानों में अंग्रेजी शिक्षण का आंदोलन चलाया।

मदरसे अर्थात सिर्फ धर्म शिक्षण, ऐसा स्वरूप ब्रिटिशों के समय में शेष रह गया। मुख्यतः पश्चिमी लोगो के दृष्टिकोण से मदरसे अर्थात सिर्फ धर्म शिक्षा देने वाली संस्था ब्रिटिश काल में और ब्रिटिशभारत छोड़कर जाने के बाद मदरसा यह धार्मिक शिक्षा देनेवाले और समाज के आधार से चलाए जाने वाले केन्द्र सिद्ध हुए। 1986 के शिक्षण नीति के बाद मुस्लिम समाज की शैक्षणिक दुरावस्था पर उपाय ढूंढते समय 'मॉडनीयजेशन ऑफ मदरसा' योजना आई और फिर से गणित, विज्ञान, इंग्रजी इत्यादि विषयोंका समावेश और उसके लिए सरकारी अनुदान दिए गए। मात्र भारत में मदरसे में 4 प्रतिशत मुस्लिम बच्चे जाते थे, ऐसा सच्चर समिति कहती है। इसके अलावा मदरसे अर्थात शिक्षणाधिकार की चौखट में बैठते हैं क्या? इस पर विवाद है। मदरसे में सीखने वाले बच्चे मुख्य प्रवाह में आते हैं क्या? कितने आते हैं? यह प्रश्न अनुत्तरित है। इसके अलावा राष्ट्रीय एकात्मता शाला के कमरों में से आकार लेती है कहें तो कम से कम कक्षा में अलग-अलग धर्म के बच्चे एकत्र सीखते समय मित्र हो सकते थे। कोठारी कमिशन की ''कॉमन स्कूल'' यह अवधारणा महत्त्वपूर्ण है। उससे लोकशाही में शिक्षण यह सरकार की जिम्मेदारी है।

पर मदरसे के बारे में भारत में जो वाद दिखाई देता है उसमें धर्म के राजकारण का और धर्मांधता का बड़ा हिस्सा है। मदरसे दहशतवादियों के अड्डे से वे राष्ट्रदोह सिखाते, यहाँ तक प्रचार किया जाता था। इसलिए मदरसे की तरफ सर्वसामान्य मनुष्य भी भयभीत होकर देखता है।

यह भय दूर करना और शिक्षा के प्रवाह में लाने का प्रयत्न करना आवश्यक है।

अनुवाद - मधुश्री आर्य
07387860396

संस्मरण

डॉ.अब्दुल कलाम को ज्येष्ठों के प्रतिभी उतनी ही आत्मीयता थी।

-स.गो.उर्फ नाना कुलकर्णी

(संपूर्ण राष्ट्र के हृदय में आदर का स्थान प्राप्त किए हुए स्व.राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का बालप्रेम प्रसिद्ध है। परन्तु ज्येष्ठ नागरिकों के लिए भी अत्यन्त आत्मीयता थी। पुणे के सुराज्य शक्ति संगठना के सभासद नई दिल्ली मिलने गए थे। तब डॉ.कलाम की अद्वितीय अनुभूतियों के बारे में सुराज्य शक्ति संगठना के स.गो. उर्फ नाना कुलकर्णी ने लिखा...)

ज्येष्ठ नागरिकों के जीवन में छाई उदासीनता लोप हो जाए, उम्मीदों के चित्र जो मन में उतारे थे, पर व्यवसाय और नौकरी संसार की धक्कम धक्का के दौर में आनन्द नहीं उठा पाए-अब उठा सके इस हेतु से सुराज्य शक्ति संगठना की स्थापना की गई थी। 'गए वे दिन गए' इस गीत का सुर गाने की बजाय आज भी खूबकुछ देखे जा सकते हैं। अनुभव कर सकते हैं। यह आत्मविश्वास, निराशा से पागल हुए मन को जागृत करना-इस संगठन का उद्देश्य है। सेवानिवृत्त, वृद्ध, अपंग और मानसिक रूप से दुर्बल, थके हुओं को सुविधा, सुरक्षा और सुखशान्ति मिले इस शुद्ध हेतु को आंखों केसामने रखकर सुराज्य शक्ति संगठना ने अनेक उपक्रम शुरू किए और सफल करके दिखाए। लेखन, वाचन, भ्रमण मेले और अभिजात कलाओं का अनुभव सुग्रास-भोजन देने-लेने से सुराज्य शक्ति के सन सभासदों ने आनन्द लूटा। देश विदेश पर्यटन द्वारा सहभागी सदस्यों को आए हुए अनूठे, अकल्पित और निराले लगते हैं। ऐसा ही एक आनन्द प्रसंग वाचकों के लिए दे रहा हूं।

शनिवार प्रातः 10 बजे राजधानी एक्सप्रेस से दिल्ली पहुंचना और रात्री की गाड़ी से जिम कार्बेट के मार्ग पर पहुंचना ऐसा हमारा ज्येष्ठ नागरिक पर्यटन की समय सारणी में निश्चित हुआ था। केन्द्र सरकार के और राज्य सरकार के उच्चपदस्थ सेवानिवृत्त अधिकारी तथा उद्योग व्यवसाय और शिक्षणक्षेत्र के ज्येष्ठ विख्यात व्यक्ति इस हमारी पर्यटन यात्रा में सहभागी हुए थे। अध्ययनशील और अनुभवी ऐसे 21 लोगों की यह यात्रा मेले जैसे ही थी। प्रातः 10 से रात्री 10 बारह घंटे का निवास! इसका सदुपयोग कैसा करें? कारण दिल्ली शहर के दर्शनीय स्थान सबने देखे और आजमाए हुए थे। इस निवास में आदरणीय राष्ट्रपति की मुलाकात हो जाए तो यह अत्यधिक आनन्द देनेवाला होगा ऐसा तैयारी की बैठक में सुझाया गया।

इसका कारण भी महत्त्वपूर्ण था। इस जिम कार्बेट के पर्यटन में सहभागी हुए बहुतों ने अपने राष्ट्रपति ने लिखी हुई 'विंग्ज ऑफ फायर' और 'अग्निपंख' उनका मराठी अनुवाद पढा था। टी.वी. के अनेक भाषण, विद्यार्थियों से वार्तालाप सुने थे। अनुभव लिया था। भारत के सुदूर दक्षिणी किनारे पर रामेश्वर मंदिर से अटूट नाते इसका 'चैक्षुवैसत्यं' वृत्तान्त बहुतों के मन में छाया हुआ था। राष्ट्रपति अब्दुलकलाम प्रत्येक भारतीयों के मन में अत्यन्त आदर के स्थान पर हैं। इस पर किसी को शंका नहीं। इसलिए यह कैसा हुआ देखेंगे।

भारतीय ज्येष्ठ नागरिकों की कामना तथा मिलने की प्रार्थना को राष्ट्रपति इन्कार नहीं कर सकते ऐसा विश्वास प्रत्येक के मन में दृढ था। सुराज्य शक्ति की तरफ से एक विनंती पत्र भेजा गया और अतिशय आनन्द की बात तो यह कि राष्ट्रपति के सचिव ने स्वीकृति का पत्र तुरन्त वापसी डाक भेज दिया।

हमें मुंबई पहुंचतेही पहला धक्का लगा। राजधानी एक्सप्रेस पांच घंटे विलम्ब से छूटने की घोषणा सबको धक्का देने वाली थी। दिल्ली ठीकसमय पर पहुंचते तो राष्ट्रपति की मुलाकात संभव थी। अब क्या? सारे यात्री समर्थ रामदास स्वामी के आनन्दवन की तरह 'यत्न तो देव जाणावा' यही उनकी उम्मीद! सहभागी यात्रियों में से ज्येष्ठ सदस्यों को मुंबई सचिवालय का सहारा था। वहाँ जाकर राष्ट्रपति भवन का फोन मिलाया संपर्क होने पर वस्तुस्थिति बताई। देरे होगी तो भी मिलने की परवानगी चाही। राजधानी एक्सप्रेस निकली वह तो तेज गति से भाग रही थी। पर हम सबको वह गति कम लग रही था। दिल्ली कितने बजे पहुंचेगी इसका अन्दाजा नहीं आ रहा था। हमारे डब्बे में मोबाईल फोन एक सभ्य मनुष्य के पास था। उन्हें प्रार्थना की। गाड़ी में फिर से राष्ट्रपति भवन में सम्पर्क किया।

'भारत का मूर्तिमान अभिमान' कहकर जिसका उल्लेख कर ऐसे अपने राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के निजि सचिव ने जो उत्तर दिया उसे हम सभी को अत्यन्त आनुन्द हुआ। वे बोले साहब ने आप सब की मुलाकात की अनुमति दी है। आप दिल्ली स्टेशन पर पहुंचते ही सीधा राष्ट्रपति भवन आइए। आदरणीय राष्ट्रपति पूर्व नियोजित कार्यक्रम के लिए बाहर जाने वाले थे। आप सबकी मुलाकात के लिए रूके हैं। समय गंवाओं मत।

अपने देश में दूर-दूर से मिलने आने वाले ज्येष्ठ नागरिकों, अपने देश के प्रथम नागरिक व्यस्त समय में से समय निकालकर ठहरते हैं। मिलना चाहते हैं यह केवल भारतीय जीवनमूल्यों की परश्रद्धा रखने वालों से ही संभव हैं। निरीह वृत्ति, निर्वैर

भावना, निष्पक्ष वर्तन और जनता में ही भगवान देखने वाले महान व्यक्ति से ही अपेक्षित है।

हम दिल्ली स्टेशन पर पहुंचे, एक क्षण का भी विलम्ब न करते हुए हमारी गाड़ियां राष्ट्रपति भवन की तरफ भागने लगी। समय हो गया था। क्या और कैसे होगा? सब के मन चिन्ताग्रस्त थे। ऐसे समय की चुप्पी बहुत कुछ बोलती है।

प्रवेशद्वार पर मामूली सी जांच हुई। हमारे पास के अनुमतिपत्र देखकर हमारे लिए राष्ट्रपति भवन के सब दरवाजे खुल गए। निजिसचिवने हम सबका बड़ी आस्था से स्वागत किया। 'राष्ट्रपति आपकी रस्ता देख रहे हैं।' उनके मुख से ये शब्द सुन कर सबके मन कृतज्ञता से भर गए मैं अब उस क्षण का वर्णन नहीं कर सकता।

एक भव्य आंगन में हम बैठे, राष्ट्रपति के आते ही हम सब खड़े हो गए। अभिवादन किया। राष्ट्रपतिने भी आसन स्वीकारा। हम सब का परिचय लिया। प्रत्येक का व्यवसाय, नौकरी के अनुभव इत्यादि अनौपचारिक पूछताछ की। राष्ट्रपति ने अपने पुणे शहर में निवास के समय तथा मुलाकात पर सन्तोष व्यक्त किया। चायपान हुआ। निकलते समय सुराज्य शक्ति इस संगठना का जानकारी पत्र हमने दिया और सबके मनकी भावना प्रातिनिधिक शब्दों में हमने व्यक्त की।

'हम सब सेवानिवृत्त मंडल उम्र के साठ वर्ष पार करने पर भी तन-मन से हम अभी सक्षम है। देश ने हमारे अनुभव तथा सक्षमता का लाभ लेना चाहिए। इसके लिए हमें वेतन नहीं चाहिए, पेंशन नहीं, न ही मानधन! राष्ट्र के लिए दिए गए आपके योगदान का आदर्श हमारे सामने हैं। इसलिए हमें देश सेवा का मौका मिले!'

राष्ट्रपति ने हंसते हुए प्रसन्नता से हमें विदा किया। फोटो उतारने दिए। सुरक्षकों को बुलाकर 'मोगल गार्डन' दिखाने कहा। इस मुलाकात से हम सब बहुत प्रभावित हुए।

'अल्ला-इश्वर तेरे नाम!' महात्मा जी के प्रार्थना मंत्र का साक्षात्कार हमें आज अनुभव हुआ। नई शताब्दी में भारत को मिले इस विज्ञाननिष्ठ महान संशोधक सत्प्रवर्तन वाले राष्ट्रपति को दीर्घ जीवन मिले सही एक प्रार्थना इस प्रसंग पर करते हुए हम राष्ट्रपति भवन से बाहर आए।

जिम कार्बेट की पर्यटन यात्रा का यह लोक विलक्षण अनुभव सुराज्य शक्ति पर्यटन विभाग के इतिहास का सुवर्ण क्षण नहीं है क्या?

अनुवाद-मधुश्री आर्य **-स.गो.उर्फ नाना कुलकर्णी**
07387860396

ईसाई समाज से मद्यपान नष्ट करना

–रॉबर्ट फर्नांडिस/फा.मायकल जी.

'हम सबके प्रयत्नों से संभव है'

('मद्यपान' यह हमारे समाज में गौरवप्राप्त कर रहा है। उसे कहीं तो लगाम लगानी पड़ेगी, एक कार्यकर्ता की यह एक पुकार...)

मानव एक रहस्य है। जन्म के बाद बचपन से जो संस्कार उनपर पड़ते हैं। उसी के अनुसार उनका जीवन घड़ता हे। वैसे ही सामाजिक वातावरण से ही अच्छे बुरे संस्कार वह लेता है। और जाने–अनजाने में उसका प्रभाव उसपर पड़ता है। कुछ बातें चारों तरफ की परिस्थिति से सीखता है। जिसका प्रभाव जीवन शैली पर असर दिखाता रहता है।

संसार की उत्पत्ति से आजतक मानव अनेक बातों से था। अनुभवों से प्रगति कर रहा है। फिर भी कुछ बातोंसे गुलाम बनकर उससे वह अधोगति में जाता है। मनुष्य अगर बुद्धिमान है तो भी उसे अनेक बातों का स्पष्टीकरण करना नहीं आता। कभी कभी तो बुरी बातों की तरफ ही ज्यादा खिंचता जाता है। तथा फंसता है। ऐसे समय में उसे बाहर निकाल कर सन्मार्ग पर ले जाने के लिए मार्गदर्शन करने की जरूरत होती है। समाज में चारों तरफ दोनों प्रकार के लोग रहते हैं। कुछ सुसंस्कारों के कारण यशस्वी व कुछ वाम मार्ग की वजह से अयशस्वी होते हैं। उनके अनुभवों से दूसरों ने सीखना चाहिए और अपना मार्ग सुधार कर यशस्वी हो सकते हैं।

अपने वसई विभाग में कई रूढि परंपरा, चाल रीतियां पूर्वकाल के हम पर प्रभाव डाले हुई हैं। 'पोर्तुगीज, अंग्रेज यूरोपिअन संस्कृति का प्रभाव वसई के ईसाई लोगों पर अधिक पड़ने से उनकी कई अच्छी बातें तथा कई अनावश्यक बाते ही स्वीकार लीं। खाने–पीने की, पोषक की, ऐशोआराम की पद्धति का हम पर परिणाम हो कर वह हमारी आवत हो गई। मांस मटन खाना, मद्यपान–धूम्रपान करना, तीज त्योहार मनाना, आदि बातों का प्रभाव ईसाई लोगों पर पड़ने से उन रूढ़ि परंपराओं को छोड़ते नहीं तथा आज उसमें अतिरेक होने पर उसका दुष्प्रभाव दीख रहा है। तथा समाज की अधोगति हो रही है। अब समाज को योग्य तथा प्रगति की तरफ जाने के लिए कौनसी बातें चाहिए तथा कौनसी बातें नहीं चाहिए इसका विचार करके धर्मगुरुओं ने नेता लोगोंने, प्रतिष्ठित लोगोंने, समाज सुधाकरों नें, संगठन के कार्यकर्ताओं ने पहल करके समाज की उन्नति के लिए प्रयत्न करना चाहिए, समयानुसार उसमें परिवर्तन करना चाहिए।

धर्मगुरु आदरणीय व्यक्तित्व होता है। धर्म गुरु का आदर्श महत्त्वपूण होता है। उन्होंने आदर्श दिखा कर प्रबोधन किया तो खूब ही अच्छा परिणाम होगा। कुछ लोग प्रतिष्ठित, श्रीमंत लोगों के जीवन पर अंगुली उठाते रहते हैं। इसलिए सब मान्यवरों के आदर्श जीवन हो तो उसका भी परिणाम सब जगह निश्चित होगा। इस तरह अगली पीढ़ी को हम बुरी बातों से दूर रख सकते हैं।

हरेक को आनंद, सुख समाधान, मौज–मस्ति, धनाठ्यता उन्नति चाहिए। परन्तु उससे मौजमस्ति, तीजत्योहार, बढ़ रहा है। भोगवादी जश्न, उसमें मद्यपान की अधिकता, नई पीढ़ी को आदर्श दे रहे हैं।, इसका विचार करना आज आवश्यक हो गया है। इसमें आध्यात्मिकता पाली जाती है क्या? पैसों का बिनाकारण अपव्यय करता है क्या? बच्चोंका शिक्षण, बीमारी, बुढ़ापा आदि के लिए पैसा जमा रखना चाहिए।

आज ईसाइयों के पास शिक्षा की वजह से, नौकरी धंधे की वजह से या जमीन को ज्यादा कीमत मिलने के कारण समृद्धि आ गई है। वह टिकाकर रखनी चाहिए सुखी जीवन के लिए कौनसी आवश्यक तथा कौनसी अनावश्यक बातें हैं, यह देखना चाहिए अनेक बातों का विचार करते समय ईसाई लोगों को शराब पीने वाला शराबी कहते हैं। शराब के व्यसन की वजह से अनेक परिवार बरबाद हुए हम देखते हैं। फिर भी अभी ईसाई परिवार शराब बनाते हैं। बेचते हैं। जन्म से मृत्युतक की रूढ़ि में लोगों को शराब चाहिए। यह सब बन्द करके ईसाई लोग कब आदर्शमय जीवन जिएंगे? हम केवल मंदिर में जाने वाले लोग बनकर रहेंगे क्या?

आज नई पीढ़ी को ऐशोआराम की आदत हो गई है। मद्यपान अनैतिक काम करते हैं। परिवार के बड़े लोगों को उनकी तरफ देखने का समय नहीं है। जवान और युवा धर्म गुरु या धर्म भगिनी होने के लिए आगे नहीं आते। मां बाप से बच्चे दूर हो रहे हैं। अध्यात्मिक बातों में कमी आ गई है। यह बात ठीक है क्या?

संपूर्णतः विचार करते समय ईसाई समाज में आदर्श जीवन के लिए हमें आवश्यक बातों के लिए ही पैसा खर्च करें खर्चे वाला समारोह तथा उसमे शराब तुरन्त बन्द करना चाहिए। ईसाई लोगों ने शराब बेचना शराब बनाना, नई पीढ़ी के सामने शराब पीना टालना चाहिए। थोड़े में ईसाई लोगों को कहीं भी मद्यपान करना ही नहीं चाहिए। इस तर से मार्गदर्शन लोगों को बताने की नितांत जरूरत है।

ऊपर की सब अनावश्यक बातें में परिवर्तन करने के लिए सब धर्म गुरु एकमत होंगे, उन्होंने किसी भी प्रसंग पर मद्यपान या मद्यवितरण करना नहीं तथा मद्यपान न करने तथा शराब न बेचनेवाले परिवारों को प्रोत्साहन देवें, सब धर्मगुरुओं

का नेतृत्व महत्व का है। वैसे ही संगठन के कार्यकर्ता, प्रतिष्ठित, धनाढ्य, मान्यवरों ने समाज में ईसाई मान्यताएँ मानकर मद्यपान का विरोध करके अपना त्याग, पैसा दाव पर लगाना चाहिए। थोड़े में सबने एकमत होकर जाहिर किया तो प्रभु का आशीर्वाद निश्चित ही साथ देगा।

अनुवाद : मधुश्री आर्य

07387860396

संस्थापरिचय

साने गुरुजी कर्मभूमि स्मारक संकल्पना

'खान्देश' पूज्य साने गुरुजी की कर्मभूमि। अमळनेर में गुरुजी लम्बे समय तक रहे, उन्होंने शिक्षक, विद्यार्थी छात्रालय के परम प्रिय व्यवस्थापक, प्रयत्नशील बच्चों की प्रेरणा स्थान, स्वातंत्र्य सेनानी, शेतकरी मजदूरों के संघटक, लेखक, कवि, पत्रकार अनुवादक भूमिगत आंदोलन के नेता, जाति निर्मूलन के लिए प्रयत्न करने के समर्थक, फैजापुर के पहले अधिवेशन के संयोजक आदि सब भूमिकाएं गुरुजी ने सफलता पूर्वक निभाई। इस खानदेश की भूमि से ही उनका राजकीय सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक कामों का, सिक्का महाराष्ट्र की तीन पीढियों पर रहा है। गुरुजी ने अपनी वाणी और लेखनी द्वारा जीवनभर लोकशाही, समाजवाद, समता, बंधुता, धर्मनिरपेक्ष सामाजिक न्याय और मानवधर्म मूल्यों के कृतीशील संस्कार समाज के मन पर गहरे डाले। उनके मातृहृदयी वात्सल्य और करूणा से भरी वाणी का अनुभव जैसा महाराष्ट्र ने लिया वैसा ही मूल्यों के लिए जी जान से संघर्ष करने वाले तथा अपने कार्यों द्वारा तत्वों से लड़ने वाले असंख्य लोगों को बल देने वाले गुरुजी सबको परिचित हैं। इसलिए गुरुजी के कृतिशील स्मारक गुरुजी सबको परिचित हैं। इसलिए गुरुजी के कृतिशील स्मारक गुरुजी की कर्मभूमि अर्थात अमळनेर में हो जहांू से नई पीढी को गुरजी के जीवन भर पालन किए हुए आदर्शों का परिचय हो और उसकें लिए कृति कार्यक्रम करने की प्रेरणा मिले ऐसा एक जीता जागता केन्द्र स्थापित हो ऐसी भूमिका लिए साने गुरुजी कर्मभूमि स्मारक प्रतिष्ठान कार्यरत है।

प्रस्तावित साने गुरुजी कर्मभूमि स्मारक-यह रूढार्थ में पारम्पारिक स्मारक नहीं होगा ऐसी सबकी शुरू में भूमिका रही है। सही अर्थ में साने गुरुजी के विचारों का समयानुसार कृति द्वारा स्मारक हो ऐसा प्रयत्न हैं।

गुरुजी के आदर्शों की आज के आधुनिक काल में आवश्यकता है उसके लिए युवाओं को कृतिशील बनाने की प्रेरणा स्थान ऐसा स्मारक का परिचय हो-वैसे ही

मानवकेन्द्री समताप्रतिष्ठित, समाज के विकास के लिए विविध समाज घटकों के प्रशिक्षण केन्द्र हो ऐसी इच्छा है। इसमें साने गुरुजी के चित्रमय, शिल्पमय, व्ही.डी.ओ. दृक श्राव्य(ओडिओ) प्रदर्शन विज्ञान केन्द्र, आन्तर भारती अध्ययन व प्रशिक्षण केन्द्र, कृषि तथा ग्राम विकास जानकारी व प्रयोग केन्द्र, साने गुरुजी साहित्य ग्रन्थालय व अभ्यास केन्द्र, बाल आनन्द नगरी, खान्देश की विशेषता का परिचय देने वाला प्रदर्शन जैसे स्थाई और नियमित चलने वाले उपक्रम है।

कर्मभूमि स्मारक की पहचान खानदेश के परिवर्तनवादी विचारों की प्रेरणा व क्षमता विकास केन्द्र के रूप में हो ऐसी इच्छा है। इसके लिए विविध क्षेत्रों के साने गुरुजी प्रेमी व्यक्ति तथा संस्थाओं को जोड़कर समताधिष्ठित समाजनिर्मितती का विचार आगे ले जाना आवश्यक है।

26 से 31 मई युवा श्रमसंस्कार छावनी का विवरण-आज के संघर्षमय जीवन में युवा पीढ़ी केरिअर में नाम पर अतिशय आत्मकेन्द्रित हो रही है। मैं, मेरा परिवार, मेरी नौकरी, सेवा के अतिरिक्त समाजाभिमुख करना आवश्यक है समता बन्धुता धर्म निरपेक्षता, लोकशाही, समाजवादी, सामाजिक न्याय व मूल्यों का परिचय करानाचाहिए। आज की नई चुनौतियों के सामने ठहरने की क्षमता योग्यता प्राप्त करें। इस पीढि को प्रकृति के प्रति सजग बनाए। शिक्षण, रोजगार तथा वैसे ही प्रश्नों को समझ कर उनका सामने करने बल मिले, ग्रामीण स्तर पर मानव केन्द्रित विकास के लिए युवकों के छोटेबड़े समूह सक्रिय हों इसके लिए प्राथमिक परिचय व अनुभवों का आदान प्रदान करवाने के लिए **4** वर्षों से युवा श्रम संस्कार छावनी का आयोजन किया जाता है।

हिन्दी-प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

07387860396

25 अक्टू. 15 आन्तर भारती के व्हॉटसप ग्रुप मिलन : चर्चा

साने गुरुजी जीवन पट

जन्मनाम	पांडुरंग सदाशिव साने
24 दिसम्बर 1899	जन्म पालगड, जिला रत्नागिरी
पिता	सदाशिव नारायणराव साने
माता	यशोदाबाई सदाशिव साने
1906 से 1911	प्राथमिक शिक्षण, पालगड
1911 से 1917	माध्यमिक शिक्षण, दापोली, औंध, पुणे
2 नवम्बर 1917	मातृवियोग
1918	मैट्रिक पास
1921	महात्मा गांधी के असहयोग में शामिल
1922	बी.ए.पास-एस.पी.कॉलेज पुणे
7 जुलाई 1923	अमलनेर के तत्वज्ञान मंदिर में फॅलो के रूप में दाखला
1924	एम.ए.मराठी तथा संस्कृत पास
1924 से 1930	अमळनेर छात्रावास में शिक्षक
1927 से 1930	दैनिक छात्रालय के सम्पादक
21 अप्रैल 1930	छात्रालय से बिदा
10 मई 1930	धुळे जेल, विनोबा जी के साथ, गीताप्रवचनों का लेखन
1931	शिरोड का नमक सत्याग्रह
17 जनवरी 1932	अमळनेर सभा में गिरफ्तारी, धुळे जेल में प्रस्थान धुळे
2 अगस्त 1932	धुळे जेल से नाशिक जेल में बदली
9-2-1933-1935	'श्याम ची आई' 'धडपणारी मुले' पुस्तक लिखी
1934 से 1935	'भारतीय संस्कृति' पुस्तक का लेखन
1936	काँग्रेस के खानदेशी प्रचारक, फैजपुर काँग्रेस
1937	मिल मजदूर संघ अमळनेर के अध्यक्ष पद पर
11 अगस्त से 31 अगस्त 1940	सत्य के आग्रह के लिए 21 दिनों उपवास
1942	1942 की आजादी की लड़ाई में भूमिगत कार्य
1943 से 1945	येरवाडा तथा नासिक जेल में कारावास
24 दिसम्बर 1946	'कुमारों के गांधी' कहकर सम्मान
1947	पंढरपुर में हरिजनों के विठ्ठल मंदिरमें प्रवेश के लिए अनशन
1 फरवरी से 21 फरवरी 1948	म.गांधी जी की हत्या के प्रायश्चित में 21 दिन का अनशन
15 अगस्त 1948	'साधना' साप्ताहिक, शुरू किया
1948	'बापूजींच्या गोड गोष्टी' व 'सुन्दर पत्रे' प्रकाशित
24 दिसम्बर 1949	पचासवें जन्मदिन के अवसर पर मुम्बई में सत्कार अध्यक्ष-सेनापती बापट
11 जून 1950	रविवार प्रातः चार बजे देहान्त

हिन्दी प्रस्तुति - मधुश्री आर्य
07387860396

संकलन - कु.प्रज्ञा केशव मोरे
शिवालय, जेल रोड, नाशिक रोड (महाराष्ट्र)

श्रद्धांजलि

समाज एवं हिन्दी सेवी के.जी.बालकृष्ण पिल्लै

प्रो.एन.माधवनकुट्टि नायर

हिन्दी प्रेमी, हिन्दी सेवी, लेखक, अनुवाद सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्ता तथा गाँधी दर्शन के अनुयायी के. जी.बालकृष्ण पिल्लै सन् उन्नीस सौ बयानबे से बीस सौ दो मार्च तक केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष तथा बीस सौ अप्रैल से बीस सौ तीन तक अध्यक्ष रहे। उन्होंने सन् उन्नीस सौ उनहत्तर से बीस सौ तक 'केरल ज्योति' मासिक पत्रिका के संपादक के रूप में अपनी सेवा की थी।

के.जी.बालकृष्ण पिल्लै का जन्म सन् उन्नीस सौ चौंतीस में आलप्पुषा जिले के चिंगोली में हुआ था। माता अम्मुक्कुट्टी थी और पिता त्र्राम पणिक्कर थे। चेप्पाड हाई स्कूल की पढ़ाई के बाद उन्होंने आगरा से हिन्दी निष्णात परीक्षा पास की। फिर करुवाट्टा एन.एस.एस.स्कूल में एक साल अध्यापक रहे। वर्कला, अेक्काड स्कूल में भी एक साल अध्यापक का पद संभाला। वहाँ से Agriculture Dept. में क्लर्क बने। फिर वेल्लायाणी Agriculture College. में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा बाद में Agriculture University. तृश्शूर में Joint Registrar. बन गये।

पिल्लै सन् उन्नीस सौ बावन से दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा तथा उन्नीस सौ अठावन से केरल हिन्दी प्रचार सभा से जुडकर हिन्दी की सेवा करते रहे। तीस वर्ष की लंबी अवधि में 'केरल ज्योति' का संपादकत्व संभालते हुए उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए अपना विशिष्ट एवं बहुमूल्य योगदान दिया। उन दिनों केरल ज्योति का नाम भारत भर की हिन्दी सेवी संस्थाओं में तथा हिन्दी के पाठकों में जम गया था। हिन्दी प्रदेश के अनेकों लेखक केरल ज्योति में अपने लेखों का प्रकाशन चाहते थे। यह केरल हिन्दी प्रचार सभा के लिए गौरव की बात थी।

के.जी.बालकृष्ण पिल्लै कई संगठनों से संबद्ध होकर समाज सेवा भी करते थे। Literacy forum ग्रंथ शाला संघ, कानफेड, State Resource Centre आदि में विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने अपना कर्मक्षेत्र सक्रिय एवं विस्तृत बनाया था।

पिल्लै ने केरल अनौपचारिक शिक्षा विकास समिति के प्रौढ साक्षरता यज्ञ में सहयोग दिया था। भारत सरकार के विधि मंत्रालय, शहरी विकास मंत्रालय, खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय-इन तीनों मंत्रालयों में हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रहकर हिन्दी की सेवा की थी। इनके अलावा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के शामी परिषद्,

विद्या परिषद, तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय के विद्या परिषद् में भी सदस्य थे।

उन्होंने विविध विषयों पर मलयालम में करीब 200 लेख तथा हिन्दी में चार सौ लेख प्रकाशित किये हैं। उनकी एक दर्जन लघु पुस्तकें प्रकाश में आयी हैं। मलयालम की एक सौ कविताओं का हिन्दी में उन्होंने अनुवाद किया है। कुछ मलयालम कहानियों का भी हिन्दी में अनुवाद हुआ है। विख्यात हिन्दी लेखिका श्रीमती मृदुला गर्ग के हिन्दी उपन्यास कठगुलाब का मलयालम में अनुवाद श्री बालकृष्ण पिल्लै ने किया है। श्री.एन.कृष्ण पिल्लै के भग्नभवनम् नाटक तथा सी.राधाकृष्णन के तीक्कडल कटत्रत्र् तिरूमधुरम् का भी उन्होंने अनुवाद किया लेकिन दोनों का प्रकाशन नहीं हुआ।

के.जी.बालकृष्ण पिल्लै को केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा का गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, हिन्दी विद्यापीठ का पी.जी.वासुदेव पुरस्कार तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा का कवियूर शिवराम अय्यर अनुवाद पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनकी पत्नी सरोजिनी अम्मा और अपनी दो सन्तानों–बेटा विवेकानन्द और बेटी गीता के साथ पेरूरक्कटा में रहती हैं।

ऐसे बहुमुखी व्यक्तित्ववाले के.जी.बालकृष्ण पिल्लै का निधन इकतीस मई बीस सौ पन्द्रह को हुआ। आन्तर भारती के ओर से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना।

सुभाषित माला

राजनीति के क्षेत्र में गुरुजी 'योद्धा' थे, तो वैयक्तिक जीवन में संत। उनके जैसा सर्वथा निरीच्छ नेता यदाकदा ही होता है। गांधीजी के आदेश पर तब राजनीति की हर जंग में वे पहली पंक्ति में रहे। बडी शान से कई बार जेल भुगती। लेकिन कभी उन्होंने जेलर से विशेष रियायत मांगी नहीं। राजबंदियों का 'प्रथम वर्ग' भी उन्होंने नकारा । वे सदा सामान्य कैदियों के साथ रहे। यात्रा में भी तृतीय वर्ग में ही उनकी जगह थी। वहाँ भी वे पासपडोस के लोगों में तुरंत घुलमिल जाते। प्यार से उनके साथ बतियाते; उनकी हर संभव सेवा करते। गुरुजी शतप्रतिशत जनता के आदमी थे। मनुष्य के प्रति आस्था उनके चरित्र की धूरी थी। इसी आस्था ने उन्हे 'मातृधर्मी' बना दिया।

–डॉ.मुरलीधर शहा

बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं मुक्त अभिव्यक्ति कला, कौशल-विकास व राष्ट्रीय एकात्मता के लिए

राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली, भुवनेश्वर

द्वारा आयोजित

आंतर भारती अंतर्राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव

इस वर्ष

24 दिसम्बर 2015 से 29 दिसंबर 2015 तक

भुवनेश्वर (उड़ीसा) में होगा।

8 वर्ष से 12 वर्ष की आयु मर्यादा

परिवार निवास

जो बच्चों का करेगा मनोरंजन, जुडेंगे नाते उसके प्रभु से ।

– साने गुरुजी

उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर जैसे सुंदर शहर के ख्याति प्राप्त बी.जे.ई.एम.स्कूल, बीजेपी नगर के भव्य प्रांगण में आयोजित है

बाल महोत्सव

संपर्क

मधुसूदन दास	प्रताप जेना
08895799190	09437575806
madhu.nyp@gmail.com	bjemschool.100@rediffmail.com
IVC/6/3 यूनिट – 3	बी.जे.बी. नगर
खरवाल नगर, भुवनेश्वर–75100	भुवनेश्वर (उड़ीसा)

क्रांति धर्मी – साने गुरूजी

दिसम्बर २०१५ पंजीकरण 11587/66
डाक पं.क्र. L2/RNP/OMD-71/2015-2017